विचार बिन्दु

स्वयं को बदल दो, भाग्य बदल जायेगा –कहावत

गणतांत्रिक भारत में प्रजा नागरिक क्यों नहीं बन पा रही!

इस हफ्ते 77वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। 15 अगस्त 1947 को भारत आज़ाद हुआ लेकिन 26 जनवरी 1950 को भारत एक व्यवस्थित राष्ट्र बना: जहां अधिकार लिखित हैं, कर्तव्य निर्धारित हैं, संस्थाएं परिभाषित हैं और शासन प्रणाली सुगठित है। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि 15 अगस्त को भारत को आज़ादी मिली, 26 जनवरी को भारत को आत्मा मिली। गणतंत्र भारत की सबसे बड़ी क्रांति यह रही कि उसने 'प्रजा' को 'नागरिक' में बदल दिया और सभी नागरिकों को समानता से नवाज़ दिया। इसीलिए कहते हैं कि 26 जनवरी 1950 केवल एक तिथि नहीं है, यह भारत के राजनीतिक, वैचारिक और नैतिक पुनर्जन्म का दिन है। यही वह दिन है जब भारत ने औपचारिक रूप से स्वयं को एक संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया और सत्ता के स्त्रोत को राजसत्ता, साम्राज्यवाद और वंशानुगत प्रभुत्व से हटाकर जनता और संविधान में स्थापित किया। यह दिन मनाते हुए किसी के मन में यह प्रश्न नहीं उठा कि प्रजा, अधिकार और कर्तव्य के साथ अब तक नागरिक क्यों नहीं बन सकी है। एक बार तत्कालीन राष्ट्रपति सरपल्ली राधाकृष्णन ने एक विदेश यात्रा के दौरान कहा था कि भारत एक भौगोलिक इकाई से ज़्यादा एक विचार है। तब एक बड़े अंग्रेजी अखबार के संपादक की टिप्पणी थी कि कि भारत एक नहीं अनेक विचारों की एक पूरी दुनिया है। देश की राजनीति, अर्थव्यवस्था, रहन-सहन और सोचने के तरीकों में परंपरा और आधुनिकता के बीच के अजीब मेल से बने ये विचार हैं। एक प्रश्न गंभीरता से मनन की अपेक्षा करता है वह है: क्या इन सभी को एक कैप्सूल में पैक करके भारतीयता के अनुभव को समझाया जा सकता है? जिस विचार की तरफ डॉ. राधाकृष्णन इशारा कर रहे थे वह भारत कभी सीमाओं में बंधा हुआ नहीं रहा। एक ऐसा विचार रहा जो सहस्त्राब्दियों से समय, संस्कृति, आस्था, भाषा, दर्शन और संघर्षों के बीच विकसित होता रहा है। भारत की पहचान मूलत: सभ्यतागत रही है, न कि राजनीतिक। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर वैदिक काल, बौद्ध-जैन परंपरा, मौर्य-गुप्त साम्राज्य, भक्ति-सूफी आंदोलन, मुगल काल और फिर औपनिवेशिक युग तक-भारत निरंतर बदलता रहा, पर उसकी आत्मा बनी रही। भारत का अर्थ कभी एक राजनीतिक सत्ता नहीं रहा। यह एक सांस्कृतिक-सभ्यतागत क्षेत्र था, जहां अनेक भाषाएं थीं, अनेक धर्म थे, अनेक दर्शन थे, अनेक जातियां और समुदाय थे, अनेक जीवन-पद्धतियां थीं। लेकिन इन सबके बीच एक साझा भाव मौजूद था जिसे हम सह-अस्तित्व कह सकते हैं। इसलिए भारत का विचार एकरूपता का नहीं, बल्कि बहुलता में एकता का था। भारतीय संविधान की आत्मा भी यही है। भारत लंबे समय तक एक राष्ट्रात्मक सभ्यता रहा, किन्तु आधुनिक अर्थों में राष्ट्र-राज्य नहीं। यूरोप में राष्ट्र-राज्य की अवधारणा वेस्टफेलिया संधि (1648) के बाद विकसित हुई, और सीमाओं की, संप्रभुता की, नागरिकता की और राज्य-सत्ता की स्पष्ट अवधारणा बनी। भारत की ऐतिहासिक संरचना इससे भिन्न थी। ब्रिटिश शासन भारत के इतिहास का निर्णायक मोड़ रहा। अंग्रेजों ने भारत को पहली बार एक प्रशासनिक इकाई के रूप में संगठित किया जिसमें साझी कानून व्यवस्था, साझा प्रशासन, रेल नेटवर्क, डाक व्यवस्था, जनगणना और आधुनिक शिक्षा प्रणाली थी। यहीं से भारत एक भौगोलिक-सांस्कृतिक अवधारणा से आगे बढ़कर एक राजनीतिक इकाई बनने लगा। महात्मा गांधी ने भारत को एक नैतिक राष्ट्र के रूप में परिभाषित किया, जहां राजनीति का आधार सत्य, अहिंसा और नैतिकता हो।

भारत की कोई बंद पहचान नहीं है और न इसकी कोई स्थिर परिभाषा ही हो सकती है। भारत एक निरंतर विकसित होती चेतना है। भारत एक संवाद है, संघर्ष है, समन्वय है। भारत का यह विचार समावेशी है, बहुलतावादी है, संवादात्मक है, जो किसी एक धर्म, भाषा, जाति, विचारधारा या संस्कृति में सीमित नहीं है। यही सब भारत की संवैधानिक पहचान है। संविधान ने भारत को सीमाओं से परिभाषित किया, नागरिकता से जोड़ा, अधिकारों और कर्तव्यों से जोड़ा जो कानून से संचालित है। भारत के राष्ट्र-राज्य बनने की प्रक्रिया में देश के बंटवारे ने सिखाया कि धर्म, क्षेत्र, भाषा, जाति, नस्ल और संस्कृति से बंटे समाज को एक राजनीतिक समुदाय में विकसित करना बहुत चुनौति भरा काम है। यह चुनौती 1947 में जितनी लग रही थी, उससे कहीं ज़्यादा मुश्किल साबित हुई है। पहचानों के अनेकों नये-नये आक्रामक समूह बनने के बाद, यह चुनौति और जटिल होती गई है। इसका एक कारण यह भी है कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया, एक विविध और असमान समाज में काम कर रही है। लोकतंत्र के डायनामिक्स ने एक तरफ शासन व्यवस्था पर मांगों का बोझ बढ़ा दिया, तो दूसरी तरफ संघर्ष और सामाजिक अनुशासनहीनता ने नई मांगों को पूरा करने के लिए ज़रूरी संसाधनों को जुटाना और भी मुश्किल बना दिया। राज्य के लिए मध्यस्थ की भूमिका में बने रहना भी मुश्किल कर दिया। प्रतिस्पर्धी राजनीति अनिवार्य रूप से लोकलुभावनवाद की ओर ले जाती है। व्यवस्था पर मांगों को नियंत्रित करने या सामाजिक अनुशासन लागू करने के लिए ऐसा कोई राजनीतिक तंत्र नहीं होता है जो अभिजात वर्ग को कम में काम चलाने, और अन्य को कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करता हो। राजनीति में आमूलचूल परिवर्तन की गुंजाइश तो अब बहुत सीमित हो गई है। ऐसे में भारत एक विचार की बात पर सोचें तब भारतीय कौन है यह सवाल स्वाभाविक रूप से पैदा होता है। इस सवाल का कोई सीधा जवाब नहीं हो सकता क्योंकि हर भारतीय की कई पहचानें हैं, जो धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र, भाषा, वर्ग, जाति, नस्ल और सबसे बढ़कर आधुनिकता से उसके जुड़ाव से बनती हैं। इन सभी को एक साझा सभ्यतागत ढांचे में फिट किया जा सकना अब भी संदिग्ध लगता है क्योंकि खुद उस ढांचे को भी नए विचारों, टेक्नोलॉजी और वैश्विक दबावों के साथ तालमेल बिठाना पड़ रहा है। आज़ादी की लड़ाई जब ज़ोर पकड़ रही थी, तभी सांप्रदायिक, जातिगत और आदिवासी पहचानों को बढ़ावा दिया जा रहा था। राजनीतिकरण की प्रक्रिया ने उन्हें और ज़्यादा स्पष्ट रूप दिया। इसलिए भारत का विचार एक विचार नहीं होकर एक मिश्रण, एक उलझन और एक जंजाल बन गया है। तब ऐसे में क्या किया जाए? राष्ट्र के लोकतांत्रिक भाग्य की एकमात्र आशा सभी स्तरों पर संस्थाओं के पुनर्निर्माण में ही हो सकती है, जिससे लिए समाज की जड़ों में काम करने वाले ऐसे राजनेताओं की जरूरत हैं जिनमें भारतीय संविधान में निहित व्यवस्था को उसकी भावना के अनुरूप लागू कराने का जज़्बा हो। हम शायद इस मिथक से खुद को सांत्वना दे सकते हैं कि पुराने कुलीन लोकतंत्र के खंडहरों से एक नया जमीनी लोकतंत्र उभरेगा। मगर क्या केवल मतदान से यह परिवर्तन संभव है? भारत के नागरिक हर बार इस आशा के साथ वोट देने मतदान केंद्रों पर जाते हैं कि शायद इस बार कुछ हो जाए। चुनावों में मतदान का प्रतिशत भी बढ़ा है। किन्तु मतदान के जरिए परिवर्तन ला पाने की आस्था पर अब सवाल उठाने लगे हैं। वैसे खुद भारतीय नागरिकों को यह वैचारिक दुविधा कभी नहीं रही क्योंकि यहां के मतदाता चुनावों में अपने जाति समूहों तथा अन्य क्षेत्रीय वजहों को तरजीह देते रहे हैं। आजाद भारत का इतिहास यह भी बताता है कि मतदाताओं को हमेशा किसी एक नेता पर भरोसा जरूर रहता आया है कि ये कुछ करेगा। इसीलिए माना जाता है कि मतदान से परिवर्तन संभव है क्योंकि लोकतंत्र की मूल शक्ति जनता ही होती है। लेकिन ऐसा तभी हो सकता है जब नागरिक जागरूक होकर मतदान करें। ऐसा करके वे नीतियों, नेताओं और शासन की दिशा बदल सकते हैं। मतदान में दिए गये जनता के फैसलों का सरकारी नीतियों पर असर होता है। राजनैतिक दलों की सरकारें जनता के मूड और वोट बैंक को ध्यान में रख कर ही अपनी नीतियां बदलती हैं। यानी जनता की पसंद शासन को दिशा देती है। लेकिन इसमें भी कहीं न कहीं सच्चाई जरूर है कि मतदान पर पैसे और सत्ता का प्रभाव होता है। चुनावों में धनबल और बाहुबल का असर होता है। दल-बदल और गठजोड़ की राजनीति कोई छुपी हुई बात नहीं है। यह भी स्पष्ट है कि हमारे यहां आम जनता में गंभीर शिक्षा और राजनीतिक समझ की कमी है। प्रणालीगत खामियों को भी नहीं नकारा जा सकता। जैसे चुनाव खर्च की पारदर्शिता की कमी, अपराधी पृष्ठभूमि वाले उम्मीदवार, या राजनीतिक भ्रष्टाचार - ये सब लोकतंत्र को कमजोर करते हैं। मतदान से परिवर्तन तभी संभव है जब नागरिक सजग, शिक्षित और निष्पक्ष रूप से अपने मताधिकार का प्रयोग करें। लेकिन जब मतदान केवल औपचारिकता बन जाए, या भावनाओं और जातीय समीकरणों पर आधारित हो, तो परिवर्तन कठिन हो जाता है। इसलिए सच्चा परिवर्तन तभी संभव है जब हर नागरिक जिम्मेदारी से वोट दे, सवाल पूछे और राजनीति में ईमानदारी की मांग करे। आज भारत एक आधुनिक राष्ट्र-राज्य है, और सवाल यह है कि क्या वह अभी भी एक दार्शनिक विचार है? आज पहचान की राजनीति, ध्रुवीकरण, असहिष्णुता, बहुलता पर संकट और संवाद का क्षय के दौर में भारत एक विचार की आत्मा संकट में दिखाई देती है। आज भारत केवल नागरिकों का नहीं, उपभोक्ताओं का राष्ट्र भी बनता जा रहा है। वह अब ब्रांड है, मार्केट है, उत्पाद है, प्रचार है, छवि है। राष्ट्र-राज्य का बाजारीकरण भारत के विचार को संकुचित करता है। भारत की ताकत इस संतुलन में है कि वह एक राष्ट्र-राज्य भी हो और एक विचार भी बना रहे। भारत की यात्रा सभ्यता से संविधान तक, संस्कृति से कानून तक, विचार से राज्य तक की ऐसी यात्रा है, जो 77 वें गणतंत्र दिवस पर भी जारी है।

> **26 जनवरी 1950 केवल एक तिथि नहीं है, यह भारत के राजनीतिक, वैचारिक और नैतिक पुनर्जन्म का दिन है। यही वह दिन है जब भारत ने औपचारिक रूप से स्वयं को एक संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया। यह दिन मनाते हुए किसी के मन में यह प्रश्न नहीं उठा कि प्रजा, अधिकार और कर्तव्य के साथ अब तक नागरिक क्यों नहीं बन सकी है। एक बार तत्कालीन राष्ट्रपति सरपल्ली राधाकृष्णन ने एक विदेश यात्रा के दौरान कहा था कि भारत एक भौगोलिक इकाई से ज़्यादा एक विचार है। तब एक बड़े अंग्रेजी अखबार के संपादक की टिप्पणी थी कि कि भारत एक नहीं अनेक विचारों की एक पूरी दुनिया है।**

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

पूंजी बाजार और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

निवेश की निष्पक्षता और भरोसे की दिशा में एक क्रांतिकारी अवसर

सुनील दत्त गोयल

आज पूरा विश्व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई की चर्चा कर रहा है। चिकित्सा, शिक्षा, रक्षा और उद्योग के बाद अब वह क्षेत्र, जहाँ एआई की भूमिका सबसे निर्णायक साबित हो सकती है, वह है पूंजी बाजार। विश्व के किसी भी देश का आर्थिक ढांचा हो, उसकी रीढ़ निवेशकों के भरोसे और पूंजी के सही विनियोजन पर टिकी होती है। लेकिन विडंबना यह है कि जिस पूंजी बाजार को सबसे अधिक पारदर्शी और तर्कसंगत होना चाहिए, वही आज भावनाओं, झूठी या प्रायोजित अफवाहों और स्वार्थी कुतर्क से सबसे अधिक प्रभावित है।

आज की सच्चाई यह है कि विश्व भर में लाखों कंपनियाँ सूचीबद्ध हैं, हजारों सेक्टर हैं, और प्रतिदिन करोड़ों खबरें, रिपोर्ट्स और सूचनाएँ पैदा हो रही हैं। किसी भी एक मानव विशेषज्ञ के लिए यह संभव नहीं है कि वह इन सभी का समय पर, निष्पक्ष और पूर्ण विश्लेषण कर सके। यहीं से एआई की वास्तविक उपयोगिता शुरू होती है।

आज चाहे म्यूचुअल फंड का निवेश सलाहकार हो, डिस्ट्रीब्यूटर हो या पोर्टफोलियो मैनेजर-यह मान लेना कि वह पूरी तरह निष्पक्ष होगा, व्यावहारिक नहीं है।

मानव स्वभाव में:–लालच है, डर है, और 'मौका छूट न जाए' का भय यानी फोमो है। इसके अलावा, यह भी एक सच्चाई है कि भारत सहित कई देशों में निवेश सलाह का बड़ा हिस्सा कमीशन आधारित मॉडल पर चलता है। यानी जिस फंड या बीमा उत्पाद में ज्यादा कमीशन है, वही निवेशक के सामने ज्यादा मजबूती से पेश किया जाता है। ऐसे में निवेशक को यह भरोसा कैसे हो कि उसे दी गई सलाह वास्तव में उसके हित में है? ऐसे में विक्रेता डिस्ट्रीब्यूटर या ब्रोकर या सलाहकारअपने मिलने वाले कमीशन से प्रभावित न हो यह संभव नहीं है ।

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड के स्वयं के आँकड़ों के अनुसार, भारत में म्यूचुअल फंड उद्योग का बड़ा हिस्सा अभी भी रेगुलर प्लान के माध्यम से आता है, जहाँ निवेशक अप्रत्यक्ष रूप से हर साल 0.5 प्रतिशत से 1 प्रतिशत तक अतिरिक्त लागत चुकाता है। इसके विपरीत, डायरेक्ट प्लान में वही निवेश कम लागत पर संभव है-लेकिन जानकारी के अभाव में अधिकांश छोटे निवेशक आज भी इसे नहीं अपनाते। यही नहीं, बीमा क्षेत्र में भी स्थिति अलग नहीं है। बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण की रिपोर्ट्स बताती हैं कि कई जीवन बीमा पॉलिसियाँ अपने पूरे कार्यकाल में निवेशक को बैंक एफडी से भी कम रिटर्न देती हैं, जबकि उनका विपणन निवेश के नाम पर किया जाता है। और जांच करने पर यह पाया जाता है कि वह पॉलिसी उसको रॉंग सेलिंग यानी झूठे वादे प्रलोभन या झूठी जानकारियां देखकर के बेची गई है।

विकसित देशों का अनुभव: कमीशन से मुक्ति, यदि हम वैश्विक नीतियों को देखें, तो तस्वीर और स्पष्ट होती है। यूरोप में श्इघ्ङ घ्छ के तहत निवेश सलाह में कमीशन आधारित प्रोत्साहनों पर कड़ा नियंत्रण लगाया गया है। ब्रिटेन और नीदरलैंड जैसे देशों में तो निवेश सलाहकारों के लिए कमीशन लेना लगभग पूरी तरह प्रतिबंधित है। वहाँ निवेशक:–सलाह के लिए सीधे फीस देता है, और सलाहकार केवल निवेशक के प्रति जवाबदेह होता है। परिणाम यह हुआ कि: निवेश निर्णय अधिक पारदर्शी हुएगलत उत्पादों की बिक्री घटी और निवेशकों का भरोसा बढ़ा, भारत में भी पिछले 4-5 वर्षों में डायरेक्ट प्लान की शुरुआत इसी दिशा में एक कदम है, लेकिन यह अभी अधूरा सुधार है।

अब सवाल उठता है-इस व्यवस्था का समाधान क्या है? उत्तर है: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस। यदि कोई निवेशक अपनी आय, खर्च, जोखिम सहनशीलता, निवेश लक्ष्य जैसी वास्तविक जानकारी एआई सिस्टम को देता है, तो एआई किसी कंपनी या फंड से प्रभावित नहीं होगी। किसी कमीशन के दबाव में नहीं होगी और भावनाओं के बजाय केवल डाटा और तर्क के आधार पर सलाह देगी। आज वैश्विक स्तर पर एआई सिस्टम लाखों बैलेंस शीट्स, कैश फ्लो स्टेटमेंट्स, मैक्रोइकॉनॉमिक डेटा और खबरों का रीयल-टाइम विश्लेषण कर सकते हैं। जो काम एक टीम को हफ्तों में करना पड़े, वही काम एआई कुछ सेकंड में कर सकती है।

पूंजी बाजार में कई बार देखा गया है कि:किसी देश का एक नीतिगत बयान, किसी कंपनी पर एक कानूनी केसया कच्चे तेल या माल की कीमत में मामूली बदलाव पूरे सेक्टर को हिला देता है। मानव विश्लेषक अक्सर इन घटनाओं का आकलन तब करते हैं, जब बाजार अपनी प्रतिक्रिया दे चुका होता है। एआई यहाँ बढ़त ले लेती है, क्योंकि वह: खबर के स्त्रोत को तुरंत पहचानती है। उसके ऐतिहासिक प्रभाव का विश्लेषण करती है और सेक्टर व कंपनी पर संभावित असर का अनुमान तुरंत प्रस्तुत करती है। यही वह गति है, जिसकी आज निवेशकों को सबसे अधिक जरूरत है।

भारतीय बाजारों में निवेशकों को सबसे अधिक नुकसान: अफवाहों, सोशल मीडिया संदेशों और अधूरी जानकारी से होता है। यदि हर निवेशक के पास एक ऐसा एआई-आधारित प्लेटफॉर्म हो, जो खबर की सच्चाई जाँच सके, उसका वास्तविक प्रभाव समझा सके ,और भावनात्मक फैसलों से बचा सके तो बाजार में अनावश्यक उतार-चढ़ाव भी कम होगा और निवेशकों का धन भी सुरक्षित रहेगा।

आज एआई कंपनियाँ स्वास्थ्य और चिकित्सा क्षेत्र में जिस गंभीरता से कार्य कर रही हैं, उसी स्तर का ध्यान वित्तीय बाजारों के विश्लेषण पर भी आवश्यक है। खास बात यह है कि दुनिया का अधिकांश वित्तीय डाटा पहले से ही डिजिटल रूप में मौजूद है। चुनौती केवल उसके सही उपयोग की है। वहीं नियामकों से अपेक्षा है कि वे कमीशन आधारित मॉडल पर पुनर्विचार करें। एआई आधारित निष्पक्ष सलाह को प्रोत्साहन दें और निवेशक शिक्षा को तकनीक से जोड़ें।

निष्कर्ष: भरोसे की अर्थव्यवस्था की ओर, मेरा देश के शेयर बाज़ार, सेबी, केंद्रीय सरकार के अधिकारियों से निवेदन या सुझाव है कि वे वाकई में देश के निवेशकों के बारे में एक बड़ी सोच रखें। यदि वे स्वयं एक इंडिपेंडेंट कंपनी बनाकर इस एआई मॉडल को विकसित करें, तो इस कंपनी के यूज़र भी करोड़ों में हिंदुस्तान में हो जाएंगे। साथ ही यह कंपनी आने वाले समय में एक बहुत बड़ी रिसर्च कंपनी के रूप में उभरकर भारतीय शेयर बाज़ार में लिस्ट भी हो सकती है। अंतत:, चाहे भारतीय पूंजी बाजार हो या वैश्विक-पैसा निवेशकों का होता है, और जिम्मेदारी पूरे सिस्टम की।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कोई जादू नहीं है, लेकिन यह पारदर्शिता ला सकती है, निष्पक्षता सुनिश्चित कर सकती है और निवेश को अफवाहों से निकालकर तथ्यों की जमीन पर ला सकती है। यदि एआई का सही उपयोग हुआ, तो यह केवल तकनीकी क्रांति नहीं, बल्कि निवेश जगत में भरोसे की नई अर्थव्यवस्था की शुरुआत होगी।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल, महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री।

घरेलू हिंसा और खोया हुआ बचपन

डॉ. मिनाक्षी धारीवाल

घरेलू हिंसा का पूरे परिवार पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। बच्चे बहुत ही कोमल एवं भावुक होते हैं, इसलिए उनके साथ बहुत ही प्यार और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। इसका प्रभाव उनके कोमल मन पर बहुत लंबे समय तक अंकित रहता है। भले ही किसी बच्चे या युवा को शारीरिक रूप से हानि न पहुंचाई जा रही हो, लेकिन घरेलू हिंसा वाले घर में रहना भी बाल-शोषण ही है। घरेलू हिंसा के माहौल में पले-बढ़े बच्चों के अल्पकालिक और दीर्घकालिक शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा रहता ही है।

हर बच्चे पर इसका असर अलग-अलग होता है, भावुक बच्चे अत्यधिक प्रभावित होते हैं। हिंसा और दुर्व्यवहार का साक्षी बनना बच्चों के लिए एक कष्टदायक अनुभव होता है, चाहे हिंसा सीधे उन पर निर्देशित हो या नहीं। इसके प्रभाव आघातपूर्ण, निरंतर एवं दीर्घकालिक हो सकते हैं। ये समय के साथ बढ़ते जाते हैं और बच्चों के जीवन के हर पहलू को प्रभावित करते हैं, जिनमें स्वास्थ्य, विकास और कल्याण सम्मिलित हैं।

बच्चे घरेलू और पारिवारिक हिंसा से कई स्थितियों में प्रभावित हो सकते हैं, जैसे - अपने माता-पिता, अभिभावक के विरुद्ध हिंसा को देखना या सुनना, डर के मारे दुर्व्यवहार से छिपना, उन्हें दुर्व्यवहार करने वाले व्यक्ति के आस-पास लगातार सतर्क रहना पड़ता है, इसके अलावा उन्हें माता-पिता का समर्थन करने के कारण भी पीड़ित किया जा सकता है, दुर्व्यवहार के कारण माता-पिता का ख़राब मानसिक स्वास्थ्य व थकावट के कारण बच्चों की ठीक से देखभाल भी नहीं होती है और सबसे घातक बात कि कहीं-कहीं बच्चों के स्वयं के साथ भी दुर्व्यवहार किया जाता है।

कभी-कभी बच्चों को ऐसे व्यक्ति के साथ लगातार संपर्क में रहने के लिए बाध्य किया जाता है जो उन्हें डराता है या जिसकी उपस्थिति उन्हें उन समयों की याद दिलाती है जब वे आघात से गुजर चुके होते हैं। ऐसे डरावने माहौल में रहने से बच्चों को कम उम्र में ही परिपक्व बना दिया जाता है और वे कम उम्र में ही घर और बाहर की बड़ी जिम्मेदारियों को उठाने पर बाध्य भी कर दिए जाते हैं। उनकी मानसिक स्थिति सदैव ऐसे माहौल में रहने से शनैः शनैः पतन की ओर चली जाती है। किसी को पैनिक अटैक तो कोई ताउम्र सर्वाइवल मोड में रहने लगता है। ऐसे बच्चे रात भर सुनने वाली चीखों और सिसकियों से वे निश्चिन्त होकर सोना क्या होता है, ये भूल ही जाते हैं, उनके लिए अवसाद और चिंताग्रस्त रहना आम बात होती है।

घरेलू और पारिवारिक हिंसा से बच्चों के व्यवहार पर भी बहुत बुरा असर होता है। उनका सामान्य विकास बाधित हो सकता है, वे अपनी उम्र से छोटे या कम उम्र के लग सकते हैं यह किसी आघात के संपर्क में आने से मस्तिष्क के विकास को हुए नुकसान का परिणाम भी हो सकता है। ऐसे बच्चे अपने नज़दीकी लोगों से भी रिश्ते निभाने से डरता है और सामाजिक रूप से रिश्तों को निभाना आवश्यक नहीं समझता, इसके अलावा वो गलत संगत में भी पड़ सकते हैं। इसके चलते वो मादक पदार्थों के सेवन में या किसी गलत आकर्षण में अपना समय बर्बाद करते हैं। स्कूल में ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते क्योंकि वे लगातार खतरे की आशंका में रहते हैं। स्कूल में सजा मिलना, अनुपस्थित रहना और बार-बार स्कूल बदलना भी पढाई को प्रभावित करता है।

ऐसे बच्चों में आत्मसम्मान की कमी होती है और वे अपने व अपने आस-पास के लोगों के बारे में नकारात्मक सोच सकते हैं। कभी कभी ऐसे बच्चों में अपनी शारीरिक उपस्थिति के बारे में बहुत हीन भावना आ जाती है और इसकी भरपाई करने के लिए वे कभी-कभी गलत कदम भी उठा लेते हैं। ऐसे माहौल में रहने वाले बच्चे अधिकतर भयभीत, तनावग्रस्त, उदास, क्रोधित, चिंतित व शर्मिंदा महसूस करते हैं। भावनात्मक असुरक्षा के कारण ऐसे बच्चे कभी-कभी आक्रामक, आवेगी, हिंसक व अवज्ञाकारी हो जाते हैं। कभी-कभी ये अकेलेपन को चुन लेते हैं और बहुत एकान्तप्रिय हो जाते हैं जिससे सामाजिकता का लगभग अभाव सा हो जाता है। घरेलू और पारिवारिक हिंसा से कई तरह की शारीरिक बीमारियाँ हो जाती जैसे सिरदर्द, पेटदर्द, प्रतिरक्षा प्रणाली से संबंधित बीमारियाँ और निद्रा संबंधित विकार आम बात है।

घरेलू और पारिवारिक हिंसा के प्रभावों से बच्चों का उभरना इस बात पर निर्भर करता है कि उन्हें हिंसा से और अतीत के आघातों की याद दिलाने वाली चीजों से सुरक्षित रखा जा सकता है, उन्हें सहारा और सांत्वना का सुरक्षात्मक आवरण दिया जा सकता है, उनके स्कूल भी सहायक वातावरण प्रदान कर सकते हैं और विशेष परामर्श भी दे सकते हैं, यदि बच्चों को बचपन में हिंसा का सामना करना पड़ा है तो वे अपने माता-पिता या अभिभावक के साथ एक सुरक्षित और मजबूत रिश्ता फिर से बना सकते हैं जो उनकी रक्षा कर सके। बच्चों के जीवन में ऐसे अन्य रिश्ते भी हो सकते हैं जिनके साथ उनके अच्छे सम्बन्ध हो जैसे दादा-दादी, चाचा-चाची या पारिवारिक मित्र। बच्चे किसी सामूहिक या खेल गतिविधि का हिस्सा बनकर सकारात्मक सोच और वातावरण को प्राप्त कर सकते हैं।

इससे एक तो वे कई समूहों से परिचित होंगे साथ ही क्रियात्मकता बनी रहेगी। इससे वे तनावपूर्ण स्थिति से कुछ समय के लिए दूर रहेंगे और अन्य क्रियात्मक चीजों पर ध्यान केन्द्रित कर सकने में सक्षम हो सकेंगे। बच्चों को भरपूर स्नेह और देखभाल प्रदान करने के साथ-साथ उनके साथ सकारात्मक वातावरण में बात करने के लिये अभिभावक उपलब्ध रहें, उनसे उनकी चिन्ताओं के बारे में सरल शब्दों में जवाब दे, उन्हें रोने और दुखी होने दे व अपनी भावनाओं को उचित तरीके से प्रस्तुत करना भी सिखा सकते हैं।

घरेलू हिंसा का सामना करने वाले बच्चे अधिकतर डर, चिंता, डिप्रेशन व कम आत्मसम्मान से पीड़ित होते हैं इसलिए उन्हें नियमित प्ले थेरेपी व आर्ट थेरेपी दी जा सकती है। बच्चों के साथ रचनात्मक समय बिताया जाए जो मजेदार भी लगे और उन्हें बताया जाए कि वे किन कार्यों में अच्छे हैं ताकि उनका खोया हुआ आत्मसम्मान उन्हें प्राप्त हो सके। साथ ही उन्हें यह भी बता सकते हैं कि इसमें उनकी कोई गलती नहीं है और वे ग्लानी अनुभव न करें। घरेलू हिंसा के माहौल में पले बच्चों को प्रेम, स्नेह, सुरक्षा और सहयोग प्रदान कर इस आघात से निकला जा सकता है ताकि वे भी अन्य बच्चों की तरह सामान्य जीवन बिता सकें और दूसरों की गलतियों का बोझ अपने हृदय से उतार सकें।

-डॉ. मिनाक्षी धारीवाल, असिस्टेंट प्रो. कानोडिया महिला महाविद्यालय, जयपुर

लूणकरनसर में झील किनारे साइबेरियन पक्षी "कुरजां" ने डेरा डाला

बीकानेर, (निसं)। जिले के लूणकरनसर में इन दिनों झील किनारे साइबेरियन पक्षी कुरजां ने डेरा डाल रखा है। रूस, मंगोलिया और कजाकिस्तान से अफगानिस्तान के रास्ते भारत आने वाले साइबेरियन सारस (कुरजां) अब राजस्थान में भी ठिकाना बदल रहे हैं। भरतपुर, जैसलमेर, बाड़मेर और चूरू के बाद बीकानेर के लूणकरणसर की वेटलैंड में इस बार 25 हजार से ज्यादा कुरजां आए हैं। यह संख्या पिछली बार के सभी रिकॉर्ड से ज्यादा है। ये करीब 26 हजार फीट की ऊंचाई तक उड़ सकते हैं। झुंड में उड़ते समय वी आकार बनाते हैं। दिसंबर से फरवरी तक यहां रहने के बाद प्रवासी पक्षी फिर से साइबेरिया के लिए उड़ान भरते हैं। वे राजस्थान आने और फिर वापस जाने में करीब 10 हजार किलोमीटर तक की दूरी तय करते हैं।

प्रवासी परिंदों को देखने के लिए देश-विदेश से सैलानी यहां आ रहे हैं। परिंदों की अठखेलियों को कैमरे में कैद किया जा रहा है। लूणकरणसर (बीकानेर) पहुंचने वाले कुरजां की संख्या में बीते 10 साल में करीब 50 गुना तक बढ़ोतरी हुई है। इस बार करीब 25 हजार रिकॉर्ड संख्या दर्ज की गई है। हर साल संख्या में 20 से 30 परसेंट की बढ़ोतरी हो रही है। इसका कारण लूणकरनसर और आसपास के गांवों में इनकी बैठने की पर्याप्त व्यवस्था है।

ये प्रवासी पक्षी डेमोसाइल क्रेन हैं, जो मंगोलिया, कजाकिस्तान और साइबेरिया (रूस) जैसे ठंडे क्षेत्रों से सितंबर-अक्टूबर में उड़ान भरते हैं। हजारों किलोमीटर की लंबी यात्रा तय कर ये पक्षी नवंबर के अंत तक राजस्थान पहुंचते हैं और फरवरी अंत तक यहीं रहते हैं।

वन्यजीव विशेषज्ञों के अनुसार इनके मूल देशों में सर्दियों के दौरान तापमान माइनस 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है, जिससे जीवन कठिन हो जाता है। यही कारण है कि अपेक्षाकृत अनुकूल मौसम वाले राजस्थान को ये पक्षी अपना ठिकाना बनाते हैं। कुरजां यानी साइबेरियन सारस जब आसमान में झुंड में उड़ते हैं तो अंग्रेजी की वी शेप बनाते हैं। कुरजां पिछले करीब 40 सालों से बीकानेर और आसपास के क्षेत्रों में आ रहे हैं। लूणकरणसर क्षेत्र की खारे पानी की झील इन्हें विशेष रूप से पसंद है।

साहित्यकार और कुरजां पर रिसर्च कर रहे राजूराम बिजारणियां का कहना है कि साइबेरिया से पाकिस्तान और अफगानिस्तान के रास्ते कुरजां भारत आते हैं, लेकिन इन दोनों ही देशों में इनका शिकार होने के कारण ये इन दोनों देशों में अब कम ठहरते हैं। ये जल्द से जल्द भारत की सीमा में प्रवेश करते हैं, जहां इन्हें अनुकूल माहौल और भरपूर भोजन मिलता है।

बिजारणियां बताते हैं कि लूणकरणसर झील में पानी नमकीन (खारा) है, जो कुरजां को टेस्टी लगता है। इस पानी के कारण भी ये पक्षी अब यहां स्थायी रूप से आने लगे हैं। यहां पर प्रजनन करते हैं और इसके बाद वापस अपने ठंडे प्रदेशों में पहुंच जाते हैं। इन महीनों में कजाकिस्तान, मंगोलिया में बर्फ जमने लगती है। ऐसे में वहां प्रजनन संभव नहीं हो पाता।

राशिफल

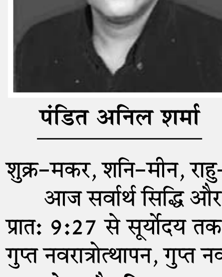

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 28 जनवरी, 2026

माघ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, कृत्तिका नक्षत्र प्रात: 9:27 तक, ब्रह्म योग रात्रि 11:54 तक, गर करण सायं 4:36 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मकर, बुध-मकर, गुरू-मिथुन, शुक्र-मकर, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि और रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। कुमार योग प्रात: 9:27 से सूर्योदय तक है। भद्रा रात्रि 3:16 से आरम्भ होगी। आज गुप्त नवरात्रोत्थापन, गुप्त नवरात्रा व्रत पारणा, रोहिणी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:59 तक, शुभ 11:19 से 12:40 तक, चर 3:20 से 4:41 तक, लाभ 4:41 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:18, सूर्यास्त 6:01

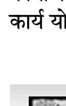

मेष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

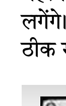

वृष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

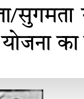

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

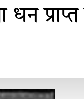

कन्या

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

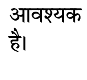

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

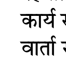

वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

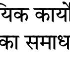

धनु

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर

व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

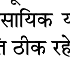

कुंभ

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

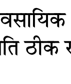

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।